[Social Issues and Environmental Problems,Vol.3 (Iss.9:SE): Sep, 2015] ISSN- 2350-0530(O) ISSN- 2394-3629(P)
Impact Factor: 2.035 (I2OR)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i9SE.2015.3252

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान का पर्यावरण संरक्षण में योगदान का अध्ययन

सरिता बोबड़े
मातुश्री अहिल्यादेवी टीचर्स, एजुकेशन इन्स्टीट्यूट, इन्दौर

सारांश
मनुष्य का जीवन पर्यावरण से प्रभावित होता है। स्वस्थ एवं स्वच्छ पर्यावरण मानव जीवन का आधार हैं । इसीलिए पर्यावरण का संरक्षण प्रत्येक नागरिक का कर्त्तव्य है। प्रस्तुत एकल अध्ययन में एक समाजसेवी संस्था द्वारा अपने महिला प्रशिक्षणार्थियों को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक कर समाज में कार्य करने के लिए प्रेरित किया जाता हैं। सौर ऊर्जा उपकरणों का निर्माण कर उनका घरेलू एवं व्यावसायिक उपयोग करना , जैविक खेती करना, एवं पर्यावरण प्रदूषण का स्वाथ्य पर पडने वाले प्रभावों से परिचित करवाकर पर्यावरण संरक्षण के प्रति संरक्षणात्मक प्रवृति का विकास कराया जाता हैं। इस अध्ययन में उपकरण के रूप में बाह्य निरिक्षण, साक्षात्कार अनुसूची, अवलोकन अनुसूची का प्रयोग किया गया। प्रदत्तों का संकलन विषयवस्तु वि लेषण विधि द्वारा किया गया एवं बाह्य निरिक्षण द्वारा प्राप्त प्रदत्तों को व्यवस्थित कर गुणात्मक रूप से व्याख्या की गयी, साक्षात्कार की विवेचना की गयी। परिणामों से ज्ञात हुआ कि बरली संस्थान शांत, स्वच्छ, प्रदूषण रहित भौगोलिक एवं पर्यावरणीय, स्थिति है ,हरियाली एवं खुला स्वच्छ पर्यावरणीय वातावरण महिला प्रशिक्षणार्थीयों में पर्यावरण संरक्षण के प्रति संरक्षणात्मक प्रवृत्ति का विकास कर प्रशिक्षणाथियों में पर्यावरण संरक्षण का प्रायोगिक अनुभव प्रदान करती हैं।

प्रस्तावना
स्वस्थ एवं स्वच्छ पर्यावरण मानव जीवन का आधार है। पर्यावरणीय सुरक्षा एवं संरक्षण की अभिवृत्ति स्वयं में एक मूल्य है।ना यहीं कारण है कि सृष्टि रचना में जल, वायु, सूर्य, पृथ्वी और वनस्पति वैभिन्य तथा जीव विविधता की रचना के बाद मानव की सृष्टि की गयीं। अतः पर्यावरण पर मानव की आश्रितता सृष्टि के प्रारंभ से चली आ रही है। इसको स्वच्छ बनाये रखना प्रत्येक व्यक्ति का परम कर्त्तव्य बनता हैं। चाहे महिला हो पुरूष हो या कोई सामाजिक संस्था हो।
बरली आदिवासियों में प्रचलित एक बहुत ही सामान्य नाम है, बरली का अर्थ होता है आदिवासी घरों की संरचना का मुख्य आधार स्तम्भ (सहारा)। इस आधार स्तम्भ के समान बरली की महिलाएं पढ़ लिख कर अपने घर, परिवार, और समुदाय का सहारा बनती हैं।

प्रयुक्त भाब्दावली की व्याख्या एवं परिभाषा
अभिवृत्ति : अभिवृत्ति से अभिप्राय व्यक्ति के उस दृष्टिकोण से है , जिसके कारण वह किन्हीं वस्तुओं, व्यक्तियों ,संस्थानों ,परिस्थितियों , योजनाओं आदि के प्रति किसी विशेष प्रकार का व्यवहार करता है।
रैमर्स, गेज तथा स्मेल के अनुसार – ''अभिवृत्ति किसी मनोवैज्ञानिक वस्तु के प्रति अनुभवों के द्वारा संगठित धनात्मक या ऋणात्मक प्रतिक्रिया करने की संवेगात्मक प्रवृत्ति है।
मकेशी एवं डोयल ने लिखा है " अभिवृत्ति को हम किसी एक वस्तु से जुडे हुए प्रत्ययों, विश्वासों, आतों और अभिप्रेरणाओं के संगठन के रूप में परिभाषित कर सकते है। "

पूर्व शोध

एस0आई0ई0 असम (1968) ,मोहाना (1983),काला (1984),मोहम्मद (1998), सिंह (2004) निम्नलिखित शोध अध्ययन से ज्ञात होता है कि सामाजिक संस्थाओं का पर्यावरण संरक्षण में योगदान रहा है।

अध्ययन के औचित्य :—उपर्युक्त शोधकार्य एक इकाई अध्ययन में बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान निष्कर्षतः स्थानीय आदिवासी समुदाय की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर संस्थान की स्थापना की गई है। सिंह आनंद द्वारा (2004) में इसी प्रकार की एक संस्था पर शोध कार्य से ज्ञात होता है कि कोई संस्था समाज की आवयकता को ध्यान में रखकर कार्य करती है उससे समाज का विकास होता है। इसीलिए इस संस्था का इकाई अध्ययन हेतु चयन किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य :—

बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान की भौगोलिक एवं पर्यावरणीय स्थिति का अध्ययन करना
बरली ग्रमीण महिला विकास संस्थान के प्रशिक्षणार्थियों की पर्यावरण संरक्षण के प्रति संरक्षणात्मक प्रवृत्ति का अध्ययन करना

शोध विधि एवं प्रविधि :— इकाई अध्ययन विधि :—

व्यक्तिगत अध्ययन विधि (Case Study Method) यह एक प्रकार की गुणात्मक पद्धति हैं, जिसमें किसी भी व्यक्ति, संस्था, समुदाय, दल के समस्त आवश्यक पक्षों का समावेश होता हैं। इस पध्दति में किसी घटना से संबंधित अतीत व वर्तमान दोनो प्रकार के तथ्यों कों आधार मानकर व्यक्ति, संस्था का गठन किया जाता है।
एक इकाई : बरली ग्रामीण विकास संस्थान :—
बरली ग्रामीण विकास संस्थान के चयन का आधार इसकी विशिष्टता एवं विशेष कार्य है जो महिलाओं की शिक्षा व उनको आत्मनिर्भर बनाने में 28 वर्षो से कार्यरत है। इस अध्ययन हेतु संस्था के संचालकों, महिला प्रशिक्षणार्थियों, पूर्व महिला प्रतिभागियो, को आव यकतानुसार सम्मिलित किया गया है ,इसके अतिरिक्त उद्देश्यानुसार व्यावसायिक प्रशिक्षण, पर्यावरण संरक्षण कार्यक्रमों, पर्यावरण संरक्षण प्रवृत्तियों, व्यक्तित्व विकास एवं सृजनात्मक कार्यो को अध्ययन हेतु सम्मिलित किया गया है।
उपकरण : प्रदत्तों के संकलन के लिए उपकरण के रूप में बाह्य निरीक्षणों, प्रतिक्रिया मापनी, साक्षात्कार अनुसूचियों, अवलोकन अनुसूचियों का प्रयोग किया गया । इसके अतिरिक्त संस्था के विभिन्न अभिलेखों ,पत्रिकाओं, एव पुराने दस्तावेजों का प्रयोग प्रदत्तों के संकलन के लिए किया गया। जिनसे उनके पर्यावरण सेवी होने का प्रमाण मिल सकें।
प्रदत्त संकलन एवं एकत्रीकरण :— शोध अध्ययन की पूर्णता के लिए प्रदत्तों को एकत्रित किया गया प्रदत्तों के एकत्रीकरण की प्रक्रिया को निम्नलिखित भीर्षकों में वर्गीकृत किया गया –

- नियोजन :—सर्वप्रथम शोधकर्ता द्वारा संस्था के मुख्य कार्यपालक अधिकारी से प्रदत्तों के एकत्रीकरण की अनुमति ली गई। फिर बरली से गई प्रतिभागी से जानकारी ली एवं उनकी वास्तविक स्थिति का अवलोकन भी किया। बरली संस्थान में वर्तमान में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियो से वार्तालाप द्वारा प्रदत्त प्राप्त किए गए। उनसे साक्षात्कार लिया गया । उनके पर्यावरण संरक्षण के विभिन्न कार्यो का अवलोकन किया गया। बाह्य निरीक्षणों, साक्षात्कार अनुसूचियों, अवलोकन अनुसूचियों के द्वारा प्रदत्त संकलित किए गए।

प्रदत्तों का विश्लेषण :—

प्रस्तुत लघु शोध अध्ययन गुणात्मक प्रकृति होने के कारण प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण उद्देश्यानुसार विषयवस्तु विश्लेषण विधि द्वारा किया गया एवं बाह्य निरिक्षण द्वारा प्राप्त प्रदत्तों को व्यवस्थित कर गुणात्मक रूप से व्याख्या की गयी, साक्षात्कार की विवेचना की गयी।

परिणाम एवं विवेचना

बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान की भौगोलिक एवं पर्यावरणीय स्थिति का अध्ययन :– प्रस्तुत शोध का प्रथम उद्देश्य था कि ''बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान की भौगोलिक एवं पर्यावरणीय स्थिति का अध्ययन करना।'' इस उद्देश्य से संबंधित प्रदत्तों का संकलन शोधकर्ता के स्वयं के गहन निरीक्षणों के आधार पर किया गया जिसका वर्णन इस प्रकार है – बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान, भमोरी, विजय नगर, इन्दौर, मे आगरा मुम्बई राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थापित है, वर्तमान में संस्थान को चारों ओर से बढ़तें शहरी निर्माण ने अपनें आगोश में ले लिया है, फिर भी संस्थान का संरक्षित शांत प्राकृतिक वातावरण मानव को अपनें अतीत की याद दिलाता हैं।

बरली संस्थान में शांत, स्वच्छ, प्रदूषण रहित भौगोलिक एवं पर्यावरणीय, वातावरणीय स्थिति में फल, सब्जियों, जड़ी बुटियों, मसालों और दालों को उगाना, सुखाना, उनकी प्रक्रिया संग्रहण व संरक्षण का प्रायोगिक अनुभव प्राप्त करती है।

संस्थान में भूमिगत जलस्त्रोतों का संरक्षण, जैविक खाद द्वारा भूमि की उर्वरा शक्ति का संरक्षण, सौर उर्जा द्वारा भोजन पकाने का प्रायोगिक प्रशिक्षण प्रदान करने में किया जाता है। संस्थान में प्रतिदिन 100 लोगों का दोनों समयों का भोजन सौर कुकरों पर बनाया जाता है। जिससे प्रतिमाह 12 एल.पी.जी. सिलेंडर या 900 किलो लकड़ी की बचत करके वन संरक्षण, पर्यावरण संरक्षण तथा महिला के स्वास्थ्य एवं धन की बचत करना सीखाया जाता हैं।

बरली ग्रमीण महिला विकास संस्थान के प्रशिक्षणार्थियों की पर्यावरण संरक्षण के प्रति संरक्षणात्मक प्रवृत्ति का अध्ययनः– बरली ग्रमीण महिला विकास संस्थान के प्रशिक्षणार्थियों की दिनचर्या प्रातः योगाभ्यास से प्रारंभ होती है ,इसके पश्चात जैविक खेती का कार्य किया जाता है, जिसमे पर्यावरण संरक्षण के लिए बिना रासायनिक खाद का उपयोग किए फल सब्जियॉ, जडी.बुटियों, मसालों उगाकर उनकी प्रक्रिया कर संग्रहण व संरक्षण का प्रायोगिक अनुभव प्रदान करती हैं। भूमिगत जलस्त्रोंतों का संरक्षण, जैविक खाद द्वारा भूमि की उर्वरा शक्ति का और सौर ऊर्जा उपकरण का निर्माण कर ,उनका भोजन पकाने में उपयोग द्वारा वन संरक्षण किया जाता है।

निष्कर्ष

समाजसेवी संस्था द्वारा सौर ऊर्जा, जल संरक्षण, जैविक खाद, खाद्य प्रसंस्करण तथा विभिन्न व्यावसायिक प्रशिक्षणों का लाभ लेकर प्रशिक्षणार्थी अथवा अन्य समाजसेवी संस्था अपने क्षेत्र में स्वयं का और अपने समुदाय का विकास कर सकता है। पर्यावरण संरक्षण में प्रमुख योगदान दिया जा रहा है।

सन्दर्भ

1. *जैन, मंजू.''(1992)– ''कार्यशील महिलायें एवं सामाजिक परिवर्तन''प्रिंटवेल प्रकाशन,जयपूर.*
2. *जोशी,रामशरण.(1996)''आदिवासी समाज और शिक्षा''–ग्रंथ शिल्पी प्रकाशन, दिल्ली.*
3. *रानी, डॉ0आशु. (1997)''महिला विकास कार्यक्रम'' ,इना श्री पब्लिशर्स, जयपुर.*
4. *शर्मा, डॉ0ब्रम्हदेव. (पंचम संस्करण 1999),''आदिवासी विकास एक सैद्धांतिक विवेचन'' मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल.*
5. *पाण्डेय, रामशकल.(प्रथम संस्करण 2001), ''शैक्षिक निबंध'' विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा.*
6. *मिश्र, करूणाशंकर. ''भारतीय शिक्षा की समस्याएँ''वोहरा पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स इलाहबाद .*
7. *सिंह,आनंद. (2004)''एक भाक्षिक नवाचारी संस्था का इकाई अध्ययन'' अप्रकाशित एम.एड़. लघु शोध प्रबंध, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर,*
8. *पाल,एच.आर.(2006.) प्रगत शिक्षा मनोविज्ञान, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली.*